



श्री यमुनाष्टक

श्री हित हरिवंश महाप्रभु जी द्वारा कृत

!! श्रीहित राधावल्लभो जयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

ब्रजाधिराज नंदनाम्बुदाभ गात्र चंदना -
नुलेप गन्ध वाहिनीं भवाब्धि बीज दाहिनिम् ।
जगत्रये यशस्विनीं लसत्सुधा पयस्विनीं,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीं ॥1॥

रसैक सीम राधिका पदाब्ज भक्ति-साधिकां,
तदंग राग पिंजर प्रभाति पुंज मंजुलाम ।
स्वरोचिषाति शोभितां कृतां जनाधि गंजनां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥2॥

व्रजेंद्र-सुनू-राधिका हृदि प्रपूर्य माणयो,
मँहा रसाब्धि पूरयोरिवाति तीव्र वेगतः ।
बहिः समुच्छलनं प्रवाह-रूपिणीमहं,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥3॥

विचित्र रत्न बद्ध सत्तटद्रयश्रियोज्ज्वलां,
विचित्र हंस सारसाध्यनंत पक्षि संकुलाम ।
विचित्रमीनमेखलां कृतातिदीनपालीतां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥4॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

www.shriradhavallabhilal.com

!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!
!! श्रीहित हरिवंशचंद्रो जयति !!

वहंतिकां श्रियाहरेर्मुदा कृपा स्वरूपिणीं,
विशुद्ध भक्ति मुज्जवलां परे रसात्मिकां विदुः ।
सुधाश्रुतित्व लौकिकीं परेशवर्ण रुपिणीं,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥५॥

सुरेन्द्रवृन्द वन्दितां रसादधिष्ठिते वने,
सदोपलब्ध माधवाद्भुतैक सद्द्रशोन्मदाम् ।
अतीव विह्वलामिवच्यलत्त रंग डोलतां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥६॥

प्रफुल्ल पंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणां,
रथांगनाम युग्मकस्तनी मुदार हंसिकाम् ॥
नितम्ब चारु रोधसां हरेःप्रिया रसोज्ज्वलां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥७॥

समस्त वेद मस्तकैरगम्य वैभवां सदा,
ममहामनीन्द्र नारदादिभी सदैव भाविताम् ।
अतुल्य पामरैरपीश्रितां पुमर्थ शारदां,
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥८॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकाल मादतः पठे,
त्कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिञ्च्य विश्व वदिताम् ।
इहैव राधिकापतैः पदाब्ज भक्तिमुत्तमा,
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र ततप्रियानुगः ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

www.shriradhavallabhilal.com